जन एक्सप्रेस

/janexpresslive

लखनऊ, शुक्रवार, 24 सितम्बर, 2021, वर्ष : 12, अंक : 336, पृष्ठ : 12, मूल्य ₹ 3.00/-

ज्वार का औद्योगिक उपयोग अन्य मोटे अनाजों की तुलना में अधिक

जन एक्सप्रेस संवाददाता

कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.डी.आर.सिंह के निर्देश क्रम में गुरुवार को ज्वार वैज्ञानिक डॉ. हरिश्चन्द्र सिंह ने ज्वार दाना के बारे में बताते हुए कहा कि यह चारे के अलावा एक औद्योगिक फसल भी है जिसका औद्योगिक उपयोग अन्य मोटे अनाजों की तुलना में अधिक होता है। ज्वार दाने का उपयोग शराब उद्योग, डबलरोटी उत्पादन उद्योग, गेहूं-ज्वार संयोजन मे किया जाता है तथा व्यापारिक रूप से शिशु आहार बनाने वाले उद्योगों में ज्वार लोबिया बीज तथा ज्वार सोयाबीन के संयोजन का इस्तेमाल किया जाता है। उन्होंने बताया कि अन्य अनाजों की तुलना में इन मोटे अनाजों के सेवन से हमें और हमारे परिवार को अधिक सुपोषण और पौष्टिकता प्राप्त होती है। डॉ.सिंह ने बताया कि ज्वार फाइबर का एक अच्छा स्रोत है जो भूख को नियंत्रित करता है ज्वार के चोकर में महत्वपूर्ण एंटीऑक्सिडेंट होते है जो कई अन्य प्रकार के भोजन में नहीं पाए जाते हैं। कम वर्षा वाले क्षेत्र में अनाज तथा चारा दोनों के लिए ज्वार बोई जाती हैं यह जानवरों का पौष्टिक एवं महत्वपूर्ण चारा भी है। उन्होंने बताया कि खरीफ की फसल होने के कारण ज्वार की फसल मे बुआई से लेकर गोदाम तक कीट एवं रोगों का आक्रमण अधिक होता है जिससे उत्पादन और गुणवत्ता में भारी कमी होती है। प्रमुख कीट- बिमारियों का उचित समय पर प्रबंधन करके अधिक उपज ली जा सकती है।

शुक्रवार • 24.09.2021

अमर उजाला

05

यूपी कैटेट : स्नातक की तीसरे चरण की काउंसलिंग ऑफलाइन

कानपुर। उत्तर प्रदेश संयुक्त कृषि एवं प्रौद्योगिकी प्रवेश परीक्षा (यूपीकैटेट) की तीसरे और विशेष चरण की काउंसलिंग ऑफलाइन होगी। सीएसए कुलसचिव डॉ. सर्वेंद्र ने बताया कि स्नातक पहले चरण की काउंसलिंग 25 सितंबर और दूसरे राउंड की काउंसलिंग 27 सितंबर से 18 अक्तूबर ऑनलाइन होगी। तीसरे राउंड की काउंसलिंग 20 अक्तूबर से 02 नवंबर और विशेष चरण की काउंसलिंग पांच नवंबर से 23 नवंबर तक ऑफलाइन होगी। वहीं, परास्नातक और पीएचडी में दाखिले के लिए केवल पहले राउंड की काउंसलिंग ऑनलाइन होगी। दूसरे और विशेष चरण की काउंसलिंग ऑफलाइन होगी। विशेष चरण की काउंसलिंग सीटें खाली रहने की स्थिति में कराई जाएगी। परास्नातक में 30 सितंबर और पीएचडी में 10 अक्तूबर से दो नवंबर तक पहले राउंड की काउंसलिंग होनी है। परास्नातक में दूसरे चरण की काउंसलिंग दो से 20 अक्तूबर और विशेष चरण की काउंसलिंग एक से 16 नवंबर तक होगी। पीएचडी पाठ्यक्रम में दाखिले के लिए चार से 16 नवंबर तक दूसरे और 18 से 30 नवंबर तक विशेष चरण की काउंसलिंग होनी है। (संवाद)

गेहू, सब्जी पर अनुसंधान के लिए 50 लाख जारी

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में गेहूं तथा सब्जी पर अनुसंधान के लिए स्थापित किए जा रहे सेंटर ऑफ एक्सीलेंस के लिए 50 लाख रुपये और जारी किए गए हैं। इसमें से गेहूं व सब्जी पर अनुसंधान के लिए 25-25 लाख रुपये खर्च होंगे। (ब्यूरो)

Sign in to edit and save changes to this file.

शाश्वत टाइम्स

हिन्दी दैनिक

वर्ष : 6, अंक : 167 पृष्ठ : 12
कानपुर महानगर, शुक्रवार
24 सितम्बर, 2021
मूल्य ₹ 3.00

www.shashwattimes.com

भाजपा का विकास जुमलेबाजी, मायावती बोलीं-यूपी में प्रति व्यक्ति आय की रिपोर्ट सरकार की खोल रही पोल...6

ज्वार पोषक तत्वों का भंडार: डॉ. हरिश्चन्द्र सिंह

शाश्वत टाइम्स

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह के निर्देश के क्रम में गुरुवार को ज्वार वैज्ञानिक डॉ हरिश्चन्द्र सिंह ने बताया कि ज्वार दाना - चारे के अलावा एक औद्योगिक फसल भी है। उन्होंने बताया कि ज्वार का औद्योगिक उपयोग अन्य मोटे अनाजों की तुलना में अधिक होता है। इसका उपयोग शराब उद्योग, डबलरोटी उत्पादन उद्योग, गेहूं-ज्वार संयोजन में किया जाता है। व्यापारिक रूप से शिशु आहार बनाने वाले उद्योगों में ज्वार लोबिया बीज तथा ज्वार सोयाबीन के संयोजन का इस्तेमाल किया जाता है। औसतन अन्य अनाजों की तुलना में ज्यादा पौष्टिकता इन मोटे अनाजों के सेवन से हम अपना खुद का और परिवार का सुपोषण सुनिश्चित कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि मोटा अनाज जैसे चेना या जेठी सांवां, ज्वार, बाजरा, मक्का, कोदो, मडुवा, सांवा, रागी, कुटकी, कंगनी आदि। ज्वार जाड़ों में पसंद किया जाने वाला अनाज है। इसमें बहुत कम वसा होती है और ये कार्बोहाइड्रेट का जबरदस्त भंडार है। इसमें आयरन और कैल्शियम का उपयोगी भंडार होता है। ज्वार पोषक तत्वों का खजाना है। इसमें नियासिन, राइबोफ्लैविविन और थियामीन जैसे विटामिनों के साथ-साथ मैग्नीशियम, लोहा, तांबा, कैल्शियम, फास्फोरस और पोटेशियम भी पाया जाता है। ज्वार के चोकर में महत्वपूर्ण एंटीऑक्सिडेंट होते हैं जो कई अन्य प्रकार के भोजन में नहीं पाए जाते हैं।खरीफ की फसल होने के कारण ज्वार की फसल मे बुआई से लेकर गोदाम तक कीट एवं रोगों का आक्रमण अधिक होता है जिससे उत्पादन और गुणवत्ता भारी कमी होती है। प्रमुख कीट- बिमारियों का उचित समय पर प्रबंधन करके अधिक उपज ली जा सकती है।

दैनिक जागरण

कानपुर, 24 सितंबर, 2021

7

यूपीकैटेट में दूसरे, तीसरे और विशेष चरण की काउंसिलिंग होगी आफलाइन

जासं, कानपुर : उत्तर प्रदेश संयुक्त कृषि एवं प्रौद्योगिकी प्रवेश परीक्षा (यूपीकैटेट) 2021 में तीसरे और विशेष चरण की काउंसिलिंग को आफलाइन माध्यम से कराया जाएगा। सीएसए कुलसचिव डा. सर्वेंद्र ने बताया कि छात्रों को स्नातक में पहले और दूसरे चरण की काउंसिलिंग को आनलाइन माध्यम से कराया जाएगा।

परास्नातक और पीएचडी में दाखिले के लिए केवल पहले राउंड की काउंसिलिंग आनलाइन होगी। स्नातक में तीसरे और विशेष चरण की काउंसिलिंग को आफलाइन माध्यम से कराया जाएगा। परास्नातक और पीएचडी में दूसरे और विशेष चरण की काउंसिलिंग ऑफलाइन होगी। विशेष चरण की काउंसिलिंग सीटें खाली रहने की स्थिति में कराई जाएगी।

लखनऊ संस्करण

वर्ष-05, अंक - 325
शुक्रवार, 24 सितंबर 2021
पृष्ठ 12
मूल्य 3 रु

दैनिक भास्कर

देश का सबसे विश्वसनीय अखबार

For epaper → www.updainikbhaskar.com

06

‘ज्वार’ भूख को नियंत्रित करने में और लंबे समय तक भूख नहीं लगने में आपकी मदद करता है

ज्वार दाना: चारे के अलावा एक औद्योगिक फसल : डॉ हरिश्चन्द्र

भास्कर न्यूज

कानपुर । सीएसए कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह के निर्देश के क्रम में ज्वार वैज्ञानिक डॉ हरिश्चन्द्र सिंह ने बताया कि ज्वार दाना - चारे के अलावा एक औद्योगिक फसल भी है। उन्होंने बताया कि ज्वार का औद्योगिक उपयोग अन्य मोटे अनाजों की तुलना में अधिक होता है। इसका उपयोग शराब उद्योग, डबलरोटी उत्पादन उद्योग, गेहूं-ज्वार संयोजन में किया जाता है। व्यापारिक रूप से शिशु आहार बनाने वाले उद्योगों में ज्वार लोबिया बीज तथा ज्वार सोयाबीन के संयोजन का इस्तेमाल किया जाता है। डॉ सिंह ने बताया कि इसमें 10.4 ग्रा. प्रोटीन, 66.2 ग्रा. कार्बोहाइड्रेट, 2.7 ग्रा. रेशा और अन्य सूक्ष्म तथा वृहत पोषण तत्व मौजूद होते हैं। विगत वर्ष उत्तर प्रदेश में ज्वार का क्षेत्रफल लगभग 1.47 लाख हे . तथा औसतन 12.47 कुन्तल / हे की दर से कुल उत्पादन लगभग 1.84 लाख मिट्रिक टन हुआ था | कानपुर मंडल में इसकी खेती मुख्यतया कानपुर देहात (13455

हेक्टे.), कानपुर नगर(12523 हेक्टे.) के अलावा औरैया (1188), फर्रुखाबाद (947) एवं कन्नौज मे लगभग 750 हेक्टेयर में की जाती है।
उत्पादकता भी कानपुर नगर की सर्वाधिक (लगभग 13.52 कु./ हेक्टेयर) है| औसतन अन्य अनाजों की तुलना में ज्यादा पौष्टिकता इन मोटे अनाजों के सेवन से हम अपना खुद का और परिवार का सुपोषण सुनिश्चित कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि मोटा अनाज जैसे चेना या जेठी सांवां, ज्वार, बाजरा, मक्का, कोदो, मडुवा, सांवा, रागी, कुटकी, कंगनी आदि। ज्वार जाड़ों में पसंद किया जाने वाला अनाज है। इसमें बहुत कम वसा होती है और ये कार्बोहाइड्रेट का जबरदस्त भंडार है। इसमें आयरन और कैल्शियम का उपयोगी भंडार होता है। ज्वार पोषक तत्वों का खजाना है। इसमें नियासिन, राइबोफ्लैविविन और थियामीन जैसे विटामिनों के साथ-साथ मैग्नीशियम, लोहा, तांबा, कैल्शियम, फास्फोरस और पोटेशियम भी पाया जाता है। इसमें प्रोटीन और फाइबर भी बहुत अधिक मात्रा में होता है जो पेट दर्द, अतिरिक्त गैस, और दस्त से छुटकारा दिलाता है। इसके अलावा फाइबर की अधिक मात्रा शरीर में खतरनाक कोलेस्ट्रॉल (एलडीएल) को हटाने में मदद करती है जिससे ह्रदय स्वास्थ्य को बेहतर बनाने, धमनियों के सख्त होने को रोकने, दिल के दौरा और स्ट्रोक जैसी स्थितियों से बचने में मदद मिलती है। ज्वार फाइबर का एक अच्छा स्रोत है जो आपकी भूख को नियंत्रित करने में और लंबे समय तक भूख नहीं लगने में आपकी मदद करता है। ज्वार के चोकर में महत्वपूर्ण एंटीऑक्सिडेंट होते हैं जो कई अन्य प्रकार के भोजन में नहीं पाए जाते हैं।ज्वार कम वर्षा वाले क्षेत्र में अनाज तथा चारा दोनों के लिए बोई जाती हैं।